प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 44 - A * MAY 2011 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	01.mp3	40	⊕	⊕	⊕	भ० विष्णु मनुष्य अवतार लेकर तीनों काण्ड की शिक्षा देते हैं। 'भक्तियोग' **'नवधा भक्ति'** :: १ संतों का संग २ भगवत कथा ३ **गुरु पद सेवा** ४ **भगवान के गुणगान एवं ध्यान**- भ० अमृत रूप हैं उन्हें किसी भी भाव से भजने पर वे मुक्त कर देते हैं ५ **मंत्रजाप** – भ० के नाम का मन से मनन अथवा ध्यान-चिन्तन ही मंत्र जाप है । प्रथम जीव ब्रह्मा को भ० विष्णु का ज्ञानोपदेश	11
2	02.mp3	49	⊕	⊕		'भक्तियोग' **'नवधा भक्ति'** :: ५ **मंत्रजाप** – भ० के नाम का मन से मनन/ध्यान-चिन्तन एवं दृढ़ विश्वास । गुरु द्वारा अर्थ सहित दिये गये मंत्र की महिमा क्यों कि वेद मंत्रों का अर्थ ही सार है ।	12
3	03.mp3	40	⊕	⊕	⊕	'भक्तियोग' **'नवधा भक्ति'** :: ६ शम दम, बहुकर्म से विरक्त मन से ध्यान व बुद्धि से ज्ञान ७ चराचर जगत को मेरा ही रूप देखो क्यों कि माया से मैं ही ४ रूप - 'जा०स्व०सु०तु०' धर लेता हूँ तथा संतों को मुझसे अधिक जानो क्यों कि वही मेरा स्वरूप बतलाते हैं ८ नीति न्याय मर्यादा की कमाई में सन्तुष्टि एवं पर दोष न देखना ९ निश्छल निष्कपट सरल व्यवहार, विनम्र वाणी, मुझमें पूर्ण भरोसा एवं सुख दुःख में समभाव, 'ज्ञानयोग' अवांतर वाक्य द्वारा **ब्रह्म** और **जीव का स्वरूप लक्षण** व महावाक्य द्वारा **ब्रह्म और जीव का एकत्व** निरूपण, **जीव ईश्वर का अभेद दर्शन ही ज्ञान है निनि० में एकत्व व ससा० में नानात्व है।**	13 Imp
4	04.mp3	42	⊕	⊕	⊕	६ अनादि :: १ ब्रह्म-'सत्यं ज्ञानं अनंतं ब्रह्म' एक अद्वितीय स्वरूप - अनादि अनंत , पाँच अनादि सांत २ अविद्या/माया/प्रकृति ३ माया का ब्रह्म के साथ सम्बन्ध ४ ईश्वर ५ जीव ६ ईश्वर जीव का भेद । ईश्वर सृष्टि=**ईक्षण** (अनेकरूप की इच्छा-विश्व विराट रूप में प्राकट्य एवं लय) से **प्रवेश** पर्यन्त जीव सृष्टि = जा०स्व०सु० + बन्ध और मोक्ष । जीव के रहने से ही देह जीवित और पवित्र लगते हैं अन्तिम भाग विशेष **(Poor recording)**	V. Imp ⊕
5	05.mp3	48	⊕	⊕	⊕	विद् = ज्ञान = ४ प्रकार = १ विद्सत्तायाम-सामान्य/व्यापक ज्ञान, शुद्ध सच्चि०ब्रह्म २ विद्विचारणे-माया/अविद्या में प्रकट ज्ञान ३ विद्वेदायाम-वेद ४ विद्लाभे। सत्य ज्ञान आनंद से पूर्ण को पुरुष कहते हैं वह पुरुष व्यापक चेतन द्रष्टा ब्रह्म है। पुरुष से असत जड़ दुःख रूप छाया/ माया प्रकट होती है। माया दृश्य है व द्रष्टा ब्रह्म है। जा०स्व०सु०-इतनी ही माया है व इनके स्थू० सू०का० शरीर जड़ हैं तथा ४थे हम ही अशरीर द्रष्टा हैं। षट्विकार स्थूल शरीर के धर्म हैं। जागृत की व्यवहारिक, स्वप्न की प्रातिभासिक एवं तुरीय की पारिमार्थिक सत्ता होती है विशेष.	V. Imp ⊕
6	06.mp3	46	⊕	⊕	⊕	**गीता :: १५/१६-२० ::**इस लोक मे **क्षर** और **अक्षर २** पुरुष हैं, जो क्षण क्षण में क्षीर्ण हो रहे हैं वे **क्षर** हैं। जगत में दिखाई पड़ने वाले भूत प्राणी जिससे उत्पन्न होते हैं वह **अक्षर** पुरुष है ये 'कारणप्रकृति' अपने कार्य की अपेक्षा से **अक्षर** है किन्तु इन दोनों से अन्य जो **उत्तम** पुरुष है वह परमअक्षर एवं प्रकृति का आधार अधिष्ठान अविनाशी परमात्मा **पुरुषोत्तम** है।	Imp ⊕
7	07.mp3	41	⊕	⊕	⊕	अर्जुन कर्म, विकर्म व अकर्म को भी जानना चाहिये क्यों कि कर्म की गति अति गहन है । वेद विहित कर्म **'कर्म'** कहलाते हैं, निषिद्ध कर्म **'विकर्म'** कहलाते हैं जो दुःख देने वाले हैं । कर्मसे सुख शान्ति चित्तशुद्धि मिलती है और फिर ज्ञान प्राप्त कर जीव मुक्त हो जाता है। जगत का आधार अधिष्ठान **'अकर्म'** है इस **अधिष्ठान सच्चि० ब्रह्म से जगत की उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय होती है** । जो कर्म में अकर्म व अकर्म में कर्म को देखता है वह ज्ञानी है उसे अब कुछ भी जानना करना शेष नहीं ।	
8	08.mp3	52	⊕	⊕	⊕	**आत्मा ही परमात्मा है**, सत्य-ज्ञान-अनंत ही ब्रह्म, परमात्मा, भगवान है। जो ब्रह्म है वही तेरा भी स्वरूप है । शरीरों के अंदर परिपूर्ण 'घटाकाश सदृश' आत्मा ही शरीरों के बाहर 'महाकाश सदृश' परिपूर्ण परमात्मा है । भीतर बाहर एक ब्रह्म ही है दूसरा कुछ नहीं है :: सृष्टि के आदि में एक ब्रह्म ही था, सबसे पहले ब्रह्म में अनादि कल्पित प्रकृति का प्रदुर्भाव हुआ, कल्पित माया/प्रकृति का ब्रह्म से कल्पित सम्बन्ध ही है । **ब्रह्म का प्रकृति से कल्पित भेद है किन्तु वास्तविक अभेद है** :: ब्रह्मोपनिषद, तैत्रीय, छान्दोज्ञ एवं मुण्डक उप० में सृष्टिक्रम :: **हमारा तुम्हारा सच्चा स्वरूप ब्रह्म ही है** ::	विशेष ⊕
9	09.mp3	39				भगवान की जहाँ भी कथा होती है वहाँ सभी नदियाँ, तीर्थ, ऋषि-महर्षि, देवता और हनुमान जी अवश्य ही उपस्थित होते हैं । **(Poor recording)**	
10	10.mp3	54	⊕	कैप्सूल ⊕ अति सुन्दर कक्षा सामग्री		सृष्टि के आदि में एक अकेले भगवान ही थे, इच्छा होने पर कि मैं एक से अनेक हो जाउँ उन्होंने माया को प्रकट किया क्यों कि अकेले सृष्टि नहीं हो सकती । माया में ब्रह्म का प्रतिबिम्ब पड़ा जिसकी ईश्वर संज्ञा हुई । इस प्रकार माया और ईश्वर जगत के माता-पिता हुए । संतान माता-पिता दोनों के अंश से बनती है अतः वह दोनों का ही स्वरूप होती है। मायापति ईश्वर बनकर भगवान जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार करते हैं, शुद्ध ब्रह्म तो ज्यों का त्यों ही है :: **ब्रह्म का स्वरूप निरूपण :: विद् धातु के ४ प्रकार :: चिदाभास की ७ अवस्थाऐं :: "गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः" का अर्थ और महिमा** ।	⊕ ⊕
11	11.mp3	35	⊕	⊕	⊕	संसार में **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ २ ही पदार्थ हैं** । सभी शरीरों को **'क्षेत्र'** तथा इनमें जीवात्मारूप से विराजमान एवं इन देहों को जानने वाले को **'क्षेत्रज्ञ'** कहते हैं। हमारा तुम्हारा स्वरूप क्षेत्रज्ञ है। सारे शरीर मेरी माया से बनते हैं इन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है। सभी व्यष्टि-समष्टि क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ मुझे ही जानो। क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ का ज्ञान ही संपूर्ण ज्ञान है ये मुझ ईश्वर का मत है। अर्जुन क्षेत्र माया/ छाया के समान झूठे हैं दिखाई तो पड़ते हैं पर हैं नहीं + **सविस्तार इनों शरीर रचना** ईश्वर के विराट शरीर में समष्टि देह जुड़े हैं।	Imp ⊕
12	12.mp3	40	⊕	⊕	⊕	भ० से सर्वप्रथम पुरुष का छाया के समान माया उत्पन्न हुई → पंचभूत → सूक्ष्म + स्थूल शरीर । इन शरीरों का समूह ही संसार हैं। माया झूठी है अतः ये देह भी झूठे हैं। ये माया अंधकार-अज्ञानरूप है जो जा०स्व०सु० के रूप में भासती है। ये दृश्य है हम इसके द्रष्टा हैं हम इसे छूते भी नहीं हैं। ये दृश्य माया ही ३ देह, ३ अवस्था, पंचकोष रूप है अज्ञानी लोग माया को अपनाकर स्वयं को शरीर ही मानने लगते हैं और शरीर के दुःखों से दुःखी होते रहते हैं। जीव को जन्म मरण का बंधन स्वरूप अज्ञान ही है, अज्ञान की निवृत्ति ज्ञान से ही हो सकती है। घट का द्रष्टा घट तो नहीं हो सकता । घट जड़ है व हम चेतन हैं ।	Imp ⊕
13	13.mp3	46	⊕	⊕	⊕	सृष्टि के आदि में एक ब्रह्म ही था जिससे पुरुष में छाया के समान त्रिगु०माया का प्रादुर्भाव हुआ, इस माया ने विद्या अविद्या का रूप धर लिया इनमें ब्रह्म का प्रतिबिम्ब पड़ा जिनकी क्रमशः सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान **ईश्वर**और अल्पज्ञ अल्पशक्तिमान **जीव** संज्ञा हुई, **ईश्वर की कल्पित सृष्टि**-ईक्षण मात्र से ईश्वर ने अनंत कोटि ब्रह्माण्ड ब्रह्मा विष्णु महेश मनुष्य पशु पक्षी आदि का रूप धर लिया और उनमें जीव रूप से प्रवेश कर गया जिससे वे चलने फिरने व्यवहार करने लगे, **जीव की कल्पित सृष्टि**- जा० स्व० सु० बन्ध और मोक्ष । कल्पना झूठी होती है अतः ईश्वर जीव जगत भी झूठे हैं **ब्रह्म का स्वरूप निरूपण + जीव ब्रह्म एकत्व**	Imp ⊕
14	14.mp3	39	⊕			अल्पज्ञ अल्पशक्तिमान जीव द्वारा ईश्वर की भक्ति करने पर सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान ईश्वर ससा०रूप धारण करके जीव को ज्ञान का उपदेश करते हैं और वह मुक्त हो जाता है। भगवान की वाणी ही त्रिकाण्डमय वेद है। कर्मकाण्ड में धर्मानुकूल वर्णाश्रम पदाधिकार के अनुसार वेद विहित कर्म, उपासनाकाण्ड में भगवान की भक्ति एवं ज्ञानकाण्ड में ब्रह्म का निनि०/सनि०/ससा० एवं जीव का स्वरूप तथा ब्रह्म-जीव एकत्व निरूपण कराया है। उपनिषदें ही ज्ञानकाण्ड यानि वेदों का सिरोभाग अथवा वेदांत कहलाता है।	
15	15.mp3	52	⊕	⊕	⊕	अन्नपूर्णोपनिष्द -**पाँच भ्रान्तियाँ** ::१ **जीव-ईश्वर भेद भ्रान्ति**-दृ०बिम्ब प्रतिबिम्ब २ आत्मा कर्ता भोक्ता भ्रान्ति-दृ०स्फटिक लोहित ३ संग भान्ति-दृ०घटाकाश महाकाश ४ जगत परमात्मा का विकार-दृ०रज्जु सर्प ५ जगत परमात्मा से भिन्न व सत्य-दृ०स्वर्ण आभूषण	विशेष १

16	16.mp3	40	⊕	⊕	⊕	**पाँच भ्रान्तियाँ** ::२ **आत्मा कर्ता भोक्ता भ्रान्ति**–दृ०स्फटिक लोहित **३ आत्मा का तीन शरीरों से संग भ्रान्ति**–दृ०घटाकाश महाकाश **४ जगत परमात्मा का विकार भ्रान्ति**–दृ०रज्जु और सर्प **५ जगत कारण रूप परमात्मा से भिन्न एवं सत्य**–दृ०स्वर्ण आभूषण	विशेष २
17	17.mp3	45	⊕	⊕	⊕	मल विक्षेप आवरण ही भगवान के दर्शन में प्रतिबन्धक हैं जिनकी निवृत्ति हेतु त्रि०वेद है यानि निष्काम कर्म से चित्तशुद्धि, भक्ति से एकाग्रता होती है तथा आवरण के नाश हेतु ज्ञानकाण्ड है। घोर अज्ञान-अंधकार रूप गाढ़ निद्रा ही माया है उसी निद्रा से स्वप्न और जागृत का संसार उत्पन्न होता है व उसी में विलीन हो जाता है किन्तु हमारा स्वरूप तो तीनों का द्रष्टा-साक्षी है माया से ही दे०इ०म०बु०प्राण उत्पन्न होते हैं इनमें ही सब कर्म हैं। **पैंगूलोपनिषद/वाराहोपनिषद :: ज्ञान की ७ भूमिकाऐं ::** १ शुभेच्छा – आत्म अनात्म विवेक, वैराज्ञ, षट्क सम्पदा, मुमुक्षुता २ विचारणा	भाग १
18	18.mp3	51	⊕	⊕		**पैंगूलोपनिषद/वाराहोपनिषद:: ज्ञान की ७ भूमिकाऐं ::१ शुभेच्छा** की सिद्धि हेतु चित्तशुद्धि + चित्त नैश्चल्य तथाआत्म-अनात्म विवेक (गरुड़ के अभिमान भंग का प्रसंग व गरुड़-कागभुशुण्डि सम्वाद) + वैराज्ञ + षट्क सम्पदा + मुमुक्षुता अपेक्षित हैं	भाग २
19	19.mp3	36	⊕	⊕		**ज्ञान की ७ भूमिकाऐं ::१ शुभेच्छा::** भगवान ही शुभ हैं उन्हें जानने ही इच्छा ही शुभ इच्छा है :: **शुभेच्छा के साधन**–निष्काम कर्म से मल नाश व उपासना से चित्त एकाग्रता+आत्म अनात्म विवेक, वैराज्ञ, षट्क सम्पदा, मुमुक्षुतासहित गुरु शरण में जाना	भाग ३
20	20.mp3	48	⊕	⊕	⊕	**ज्ञान की ७ भूमिकाऐं ::१ शुभेच्छा**–निष्काम कर्म + उपासना + विवेक वैराज्ञ षट्कसम्पदा मुमुक्षुतासहित गुरु शरण में जाना २ **विचारणा**– गुरु द्वारा ज्ञानोपदेश से मायारूपी मेघ निवृत्ति यानि अज्ञान का नाश फलस्वरूप ब्रह्म का साक्षातकार :: अवान्तर वाक्यों से ब्रह्म एवं जीव का स्वरूप निरूपण + महावाक्य से ब्रह्म-जीव एकत्वनिरूपण, यानि श्रवण + मनन	भाग ४
21	21.mp3	32	⊕	चतु:श्लोकी भागवत्		प्रथम श्लोक :: **निनि०**-सच्चि० ब्रह्म,**सनि०**–अधिष्ठान ब्रह्म+विद्या माया+उसमें ब्रह्म का प्रतिबिम्ब=ईश्वर, अधिष्ठान ब्रह्म+अविद्या माया+उसमें ब्रह्म का प्रतिबिम्ब = जीव, **ससा०**–विष्णुरूप अवतार एवं स्थावर जंगम देह **– तीनों का स्वरूप निरूपण**	
22	22.mp3	44	⊕	ज्ञान की ७ भूमिकाऐं ० सम्पूर्ण		::१**शुभेच्छा**२**विचारणा**३**तनमानसी**–श्रवण के पश्चात 'मनन एवं निधिध्यासन'अर्थात मन क्षीर्ण हो गया यानि कृश या शान्त हो गया, संसार के विषयों में चंचलता समाप्त हो गयी। विपरीत भावना का तिरस्कार ही निधिध्यासन है इसमें **'ध्याता'** साभास बुद्धि, **'ध्यान'** मन व **'ध्येय'** ब्रह्म त्रिपुटी होती है, यह **सविकल्प समाधि** है ४**सत्वापत्ति**–निधिध्यासन से ज्ञान पक्का होने को यानि सत्य में अहं भाव होने को सत्वापत्ति कहते हैं । मन के सच्चिदानंद के साथ तद्रूप होने यानि दृढ़ ब्रह्माकार वृत्ति को **निर्विकल्प समाधि** कहते हैं ५**असनशक्ति**–देह व संसार में आसक्ति अभाव–**निद्रा** के समान ६**पदार्थाभावनी**–संसार के पदार्थों का अभाव–**गाढ़निद्रा** के समान ७**तुरीयगाह**–ब्रह्मानंद में मग्न–**प्रगाढ़निद्रा** के समान समाधि में लीन कि जागता ही नहीं ।	भाग ५
23	23.mp3	42	⊕	⊕	⊕	**माया–ब्रह्म निरूपण ::** भगवान को पाने के वेद में ३ उपाय :: १ **कर्म**–सकाम एवं निष्काम, जगत स्वप्नवत् अथवा मिथ्या है अतः सकामकर्म व्यर्थ हैं,नि०कर्म से चित्तशुद्धि भगवान के ज्ञान में सहायक होती हैं २ **उपासना** ३ **ज्ञान** । जा०स्व०सु० माया मात्र हैं, इनका प्रकाशक ही सच्चिदानंद ब्रह्म है वही हमारा स्वरूप है, जो यह जानता है वह सर्व बन्धनों से मुक्त है ।	** कैप्सूल
24	24.mp3	41	⊕	⊕	⊕	अर्जुन मैं ही जगत का माता पिता धाता और पितामह हूँ। मुझे प्राप्त करने का साधन ओंकार भी मैं हूँ व ओंकार का विस्तार वेद भी मैं हूँ यानि वेद भी मैं हूँ और वेद्य भी मैं हूँ । अतः अर्जुन **जगत का अभिन्न निमित्तोपादान कारण मैं ईश्वर ही हूँ** । दृ०:- मकड़ी, पृथ्वी से उत्पन्न अन्न एवं औषधि, पुरूष के केश और लोम :: यानि अविनाशी ईश्वर परमात्मा से ये जगत उत्पन्न होता है उसमें ही रहता है फिर उसी में लीन हो जाता है । मैं ही जगत बनाता हूँ व मैं ही जगत बनता हूँ अतः जगत मेरा ही रूप है । द्रष्टा भी मैं हूँ और दृश्य भी मैं हूँ फिर मैं ही उसे मिटा भी देता हूँ और पुनः मैं अकेला ही रह जाता हूँ । अर्थात मैं ही सत्य हूँ व दृश्य जगत मिथ्या है । स्वप्न द्रष्टा में स्वप्न का संसार रहता है पर जागने पर वह स्वप्न द्रष्टा में ही विलीन हो जाता है अतः स्वप्न की उत्पत्ति स्थिति प्रलय का कारण स्वप्न द्रष्टा ही हुआ । अर्जुन तू 'नर' मुझ 'नारायण' का ही स्वरूप है । जल और तरंग की भाँति जीवात्मा-परमात्मा अभेद हैं । ये संसार मेरा ही विराट रूप है यानि एक रूप भी मैं हूँ और अनेक रूप भी मैं ही हूँ ।	अति सुन्दर *** अभेद दर्शन
25	25.mp3	35	⊕	⊕	१	**अध्यात्म रामायण/प्रथम सर्ग/राम हृदय** :: माँ सीता द्वारा भक्त हनुमान को भगवान **राम का नि० नि० स्वरूप निरूपण** :: **'रामं विद्धि परं ब्रह्मं सच्चिदानन्दं अद्वयं'**।राम की प्रेरणा से ही मेरा प्रादुर्भाव होता है व सभी शरीर मुझ माया के कार्य हैं । सब शरीर उपाधि हैं व राम उपहित हैं । सब देहों में जीव यानि अहंतत्त्व चेतन राम ही हैं । हमारा नि० नि० स्वरूप भी राम ही है ।	विशेष सुन्दर
26	26.mp3	45	⊕	⊕	२	**अध्यात्म रामायण/प्रथम सर्ग/राम हृदय** :: माँ सीता द्वारा भक्त हनुमान को भगवान **राम का नि० नि० स्वरूप निरूपण** :: **'रामं विद्धि परं ब्रह्मं सच्चिदानन्दं अद्वयं'**। भगवान का निनि० स्वरूप सच्चिदानंद है उनका जन्म मरण नहीं होता, वही जीव का भी स्वरूप है अतः तुम स्वयं को सच्चिदानंद ही जानो। अब मेरा भी स्वरूप सुनो :: मेरा स्वरूप महामाया शक्ति अथवा मूल प्रकृति है। मैं ही जगत की उत्पत्ति-पालन-संहार करती हूँ। जीव ईश्वर दोनों के शरीर मैं ही बनाती हूँ। **सीता हरण + रावण वध प्रसंग**	
27	27.mp3	38	⊕	: कैप्सूल : ओंकार द्वारा स्वरूप ज्ञान		सृष्टि के आदि में भगवान से सर्वप्रथम **ओंकार** का प्रादुर्भाव हुआ । **वेदों का मूल प्रणव है** । स्थान भेद से ओंकार के ४ नाम :- १-परा २-पश्यन्ति ३-मध्यमा ४-बैखरी हो गये । सम्पूर्ण व्याकरण ओंकार का ही विस्तार है **। 'अ उ म'** ओंकार के तीन अक्षरों ने संसार की विभिन्न त्रिपुटिओं का रूप धारण कर लिया = सत्व रज तम् / जा०स्व०सु० / ब्रह्मा विष्णु महेश / स्थूल सूक्ष्म कारण / ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय / प्रमाता प्रमाण प्रमेय आदि। समस्त संसार अज्ञान रूप है पर इनको जानने वाले हम ही ज्ञान स्वरूप हैं । **ओंकार इदं रूप से जगत और तत् रूप से ब्रह्म को बतलाता है** – **तत्वमसि** ।	** ⊕ **
28	28.mp3	51	⊕	⊕		**गीता १३/१-२ ::** अर्जुन **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं**। क्षेत्र नाम शरीर का है और जो शरीर में रहता, इसे देखता-जानता है वह क्षेत्रज्ञ है वैसे ही जैसे खेत और किसान । सभी नाम-रूप क्षेत्र हैं जिन्हें ज्ञान नहीं है । सब दिखाई पड़ने वाले शरीर हैं तथा इन्हें देखने वाला शरीरी यानि आत्मा हैं, वही हमारा स्वरूप है । **तीनों शरीरों का सविस्तार निरूपण** । **'ज्ञान'** का लक्षण **स्वयं वेद्य** है ।	१
29	29.mp3	29	⊕	माण्डूक्य भाग-१		भगवान द्वारा अपना नि०नि० स्वरूप निरूपण , एक माण्डूक्य उपनिषद मुमुक्षु को मोक्ष देने के लिये पर्याप्त है । अर्थव वेद :: माण्डूक्य उप० :: मंगलाचरण, एक अद्वितीय ब्रह्म के माया से ४ पाद, प्रथम पाद का निरूपण, **दृश्य ओंकार एवं द्रष्टा ब्रह्म है**	
30	30.mp3	37	⊕	⊕	⊕	**गीता १३/१-२ ::** अर्जुन **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं**। क्षेत्र नाम शरीर का है और जो शरीर में रहता, इसे देखता-जानता है वह क्षेत्रज्ञ है वैसे ही जैसे खेत और किसान ।स्थू०सू०का०-३ व्यष्टि शरीर जीव के व समष्टि शरीर ईश्वर के हैं। पंचीकृत महाभूतों से स्थूल, अपंचीकृत महाभूतों से सूक्ष्म एवं स्वरूप-अज्ञान कारण देह है। सारे कर्म सूक्ष्म देह में हैं, साभास बुद्धि में कर्तृत्व- भोकतृत्व एवं बन्ध-मोक्ष है। देह में अभिमान से जीव को बन्ध है और गुरु-वेद कृपा से जब अपनी आत्मा में अभिमान करता है (क्योंकि जीव का वास्तविक स्वरूप चेतन आत्मा है) तो यह बन्धन से मुक्त हो जाता है। आत्मा एकरूप से देखता है और अनेक रूप से दिखाई पड़ता है।	Imp २
31	31.mp3	29	⊕	⊕		**गीता १३/१-२ ::** अर्जुन **क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ दो ही पदार्थ हैं**। ये शरीर क्षेत्र हैं इनको कुछ भी ज्ञान नहीं है व इनके भीतर चेतन आत्मा क्षेत्रज्ञ है वह इस क्षेत्र को जानता है । क्षेत्र दृश्य हैं व क्षेत्रज्ञ द्रष्टा है । ये देह अज्ञान रूप हैं पर हम इन्हें जानने वाले हैं अतः हम देह नहीं हो सकते । संसार में पंचभूतों के कार्य जितने शरीर/क्षेत्र हैं इनको कुछ भी ज्ञान नहीं है उन सब में एक व्यापक द्रष्टा मैं ही रहता हूँ । मैं सत्य हूँ पर सारा दृश्य मेरी माया है झूठी हैं ।	३